

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 19, जॉन 18:1-19:42

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 19 है, यीशु को गिरफ्तार किया गया, मुकदमा चलाया गया, क्रूस पर चढ़ाया गया और दफनाया गया। यूहन्ना 18:1-19:42.

नमस्ते, हमने अभी-अभी यीशु के विदाई प्रवचन में अपना अध्ययन पूरा किया है और अब हम जॉन के सुसमाचार में जुनून की कहानी को देखना शुरू करते हैं। आपको याद होगा कि यदि आपने शुरूआती वीडियो पहले ही देख लिए हैं, तो मुझे आशा है कि आप उन सभी को देख रहे हैं और न केवल चुन रहे हैं, बल्कि आप हमारे पहले वीडियो से जॉन को साहित्य के रूप में संरचित कर सकते हैं। विद्वान आमतौर पर इसे संकेतों की पुस्तक के रूप में चित्रित करते हैं, यीशु का सार्वजनिक मंत्रालय अध्याय 12 में समाप्त होता है, महिमा की पुस्तक जहां यीशु बताते हैं कि क्रूस पर उनका काम भगवान को कैसे महिमा देगा और कैसे शिष्यों को इसका हिस्सा बनने की आवश्यकता है अध्याय 13 से 17 में विदाई प्रवचन में अच्छा।

तो, अब हम महिमा की पुस्तक और संकेतों की पुस्तक और महिमा की पुस्तक से गुजर चुके हैं, हम यीशु के उनके शिष्यों और जॉन के लिए सार्वजनिक और निजी मंत्रालय कह सकते हैं। तो अब हम जुनून की कहानी, यीशु की गिरफ्तारी, उनके परीक्षण, उनके सूली पर चढ़ने और उनके दफन की कहानी में प्रवेश करते हैं, और उनके पुनरुत्थान और उसके बाद शिष्यों के सामने उनके प्रकट होने के लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं। इसलिए, हम अंतिम वीडियो के बगल में अध्याय 18 और 19 को देख रहे हैं और हम अंतिम वीडियो में अध्याय 20 और 21 को संभालेंगे।

इसलिए, जब हम अध्याय 18 और 19 के बारे में सोचते हैं और यहां जो कुछ चल रहा है उसका अंदाजा लगाने का प्रयास करते हैं, तो हम देखते हैं कि हम पैराग्राफ-दर-पैराग्राफ के आधार पर जॉन के सुसमाचार की तुलना और तुलना करना शुरू कर सकते हैं। सिनोटिक गॉस्पेल के अनुरूप। हम इन वीडियो में ऐसा करने में बहुत समय बर्बाद नहीं करने जा रहे हैं क्योंकि मेरे अपने व्यक्तिगत विचार में, सुसमाचार के अध्ययन में हम अच्छा करेंगे कि हर एक को अपने लिए बोलने दिया जाए और उसकी कथा का उसी तरह अध्ययन किया जाए जिस तरह से वह सामने आती है। यीशु की कहानी को व्यक्तिगत रूप से समझें और इसकी विशिष्टता को समझें, इससे पहले कि हम इसकी तुलना अन्य सुसमाचारों से करने और इसके विपरीत करने का प्रयास करें। मुझे सिनोटिक प्रकार की तुलनाओं से कोई समस्या नहीं है और इस प्रकार का कार्य करने का प्रयास करना वास्तव में एक बहुत ही महान कार्य है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि जब हम पवित्रशास्त्र को देखते हैं तो यह प्राथमिक कार्य है जो हम करना चाहते हैं।

यदि ईश्वर चाहता था कि हमारे पास ईसा मसीह के जीवन का सारांश या स्टीरियो में ईसा मसीह का जीवन हो, तो मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर हमें आसानी से यीशु का उस प्रकार का रिकॉर्ड दे सकता था। इसके बजाय, भगवान ने हमें मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन की चार आवाजों के

माध्यम से प्रभु यीशु मसीह का चार गुना सुसमाचार दिया है, और मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से उसके व्यक्तिगत महत्व को समझें, और फिर उसकी तुलना करें। समग्र रूप से अन्य सुसमाचार के लिए। इसलिए, हालांकि हमारे पास एक स्लाइड आ रही है जहां हम आपको जॉन के वे क्षेत्र दिखाएंगे जो सिनोप्टिक्स में भी पाए जाते हैं और जो नहीं हैं, हम इसे ज्यादा महत्व नहीं देंगे क्योंकि हम सुसमाचार सिखाने की कोशिश कर रहे हैं यहाँ जॉन का, जॉन का सिनॉप्टिक परंपरा से संबंध या इसके विपरीत नहीं है।

इसलिए, हम मैथ्यू 18 और 19 के कथा प्रवाह को देखना चाहते हैं और हम पहले अध्याय 18 के साथ ऐसा करेंगे, उसके बारे में थोड़ी बात करेंगे, फिर हम अध्याय 19 की ओर वापस लौटेंगे। इसलिए अध्याय 18 में, हमारे पास एक कथा प्रवाह जहां जैसे ही यीशु ने गेथसमेन में अपनी प्रार्थना पूरी की, हमें यह बहुत छोटा संक्रमण दिया गया, 18.1, जब उसने प्रार्थना समाप्त कर ली, तो यीशु अपने शिष्यों के साथ चले गए और किड्रोन घाटी को पार कर गए। हम कुछ मानचित्रों को थोड़ा सा देखेंगे और कल्पना करने का प्रयास करेंगे कि यह कैसा रहा होगा।

हम ठीक से नहीं जानते कि वह कहाँ था, लेकिन किड्रोन को पार करने से वह जैतून पर्वत की दिशा में ले जाएगा। दूसरी ओर, एक बगीचा था, वह और उसके शिष्य उसमें गए, और जैसे ही वे उसमें थे, जाहिर है क्योंकि यह एक जगह थी जहां वे पहले अक्सर आया करते थे और यहूदा को इसके बारे में पता था, यहूदा यीशु को गिरफ्तार करने के लिए वहां था सैनिकों की एक टुकड़ी और मुख्य याजकों और फरीसियों के कुछ अधिकारियों के साथ। इसलिए, हम बिल्कुल निश्चित नहीं हैं कि क्या यह एक संयोजन बल था जिसमें कुछ रोमन सेनाएं शामिल थीं या क्या यह मंदिर पुलिस रही होगी, सबसे अधिक संभावना है कि यह यहूदी मंदिर पुलिस के साथ-साथ सैन्हेद्रिन, परिषद के कुछ अधिकारी भी रहे होंगे जो यीशु को गिरफ्तार करने आये।

तो, इस कथा के बारे में दिलचस्प बात यह है कि हमारे पास दो कथानक चल रहे हैं। हमारे पास यीशु के साथ क्या हो रहा है इसकी साजिश है, और हमारे पास पीटर के साथ क्या हो रहा है इसकी साजिश है। यह देखना बहुत दिलचस्प है कि जिस तरह यीशु के साथ विश्वासघात, गिरफ्तारी और परीक्षण सामने आ रहे हैं, उसी तरह पतरस के साथ परिस्थितियाँ और घटनाक्रम कैसे सामने आ रहे हैं।

पीटर के इनकार की तुलना यहूदा के विश्वासघात से करना भी दिलचस्प है जैसा कि किताब में वर्णित है, और हम इन दो व्यक्तियों और उन मूल्यों के बारे में सोचते हैं जो वे आज यीशु के अनुयायियों के रूप में हमारे लिए आदर्श हैं। तो चूँकि यीशु को गिरफ्तार किया जा रहा है, यहाँ पीटर का योगदान है। पीटर अपनी तलवार पकड़ता है और उसे घुमाता है, यह सोचकर कि वह मालिक की रक्षा करेगा।

उसने महायाजक के नौकर का कान काट दिया, जिससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि पीटर तलवार से अपने निशाने से लगभग छह इंच दूर था, शायद यह एक अच्छी बात है क्योंकि अगर वह सफल होता तो यह उसके लिए और अधिक कठिन होता। फिर यीशु को अन्नास के पास ले जाया गया, और हमें अध्याय 18, श्लोक 12 में बताया गया है कि अन्नास उस दिन के महायाजक का पिता था, कैफा महायाजक था, लेकिन यीशु को पहले अन्नास के पास ले जाया गया था। यह

थोड़ा अजीब और अजीब है, और विद्वान इस पर बहस करते हैं और आश्चर्य करते हैं कि ऐसा क्यों किया गया, क्या अन्नास शायद उसके बेटे कैफा के प्रमुख के पीछे की शक्ति थी।

यहां क्या हो रहा है, यह समझने के लिए पंक्तियों के बीच की रीडिंग बिल्कुल स्पष्ट नहीं है, लेकिन यीशु अन्नास से पहले आते हैं, और इसलिए हमारे यहां यीशु और अन्नास के साथ थोड़ा सा संवाद चल रहा है, जिसे मोटे तौर पर तीसरे व्यक्ति में वर्णित किया गया है। हमारे पास इस बारे में बहुत कुछ नहीं है कि हम विवरण के बारे में कुछ भी जानते हों। यीशु के बारे में विवरण वास्तव में बहुत अधिक नहीं बताया गया है।

हालाँकि, पीटर के बारे में काफ़ी विवरण है क्योंकि यह पीटर का पहला खंडन है। पतरस तीन बार प्रभु का इन्कार कर रहा है। आपको यूहन्ना 13 के अंत में याद होगा, यीशु ने उससे कहा था कि ऐसा होगा, और इसलिए मुझे यकीन है कि यीशु को इससे आश्चर्य नहीं हुआ था, हालाँकि मुझे यकीन है कि पतरस आश्चर्यचकित था क्योंकि वह वही शब्द बोल रहा था जो यीशु ने कहे थे उसे जो वह बोलेगा।

तो जैसा कि यीशु एक सुनवाई में है, एक परीक्षण, यदि आप चाहें, तो अध्याय 18 और श्लोक 16 के अनुसार महायाजक के प्रांगण में, पीटर से पूछा गया कि क्या वह यीशु के शिष्यों में से एक था। उन्होंने जवाब दिया मैं नहीं हूँ, तो, यह ठंडा था।

शिष्य और अधिकारी चारों ओर खड़े होकर आग ताप रहे थे। पतरस भी आग के पास खड़ा होकर ताप रहा था। तो, इस बीच, यीशु से वास्तव में महायाजक द्वारा पूछताछ की जा रही है, पद 19, उसकी शिक्षा के बारे में और वह कौन था, और यीशु ने बस पुष्टि की, मैं वही हूँ जो मैं हूँ, और मेरे पास पहले से ही एक सार्वजनिक मंत्रालय है, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है मैं कौन हूँ और मैंने क्या सिखाया है इसके बारे में।

आप मुझसे सवाल क्यों कर रहे हैं? उनसे पूछो जिन्होंने मुझे सुना। वे जानते हैं कि मैंने क्या कहा। इस बिंदु पर, यीशु को महायाजक को इस तरह से जवाब देने के लिए थप्पड़ मारा गया था जिसे अपमानजनक माना गया था, और इसलिए यीशु ने कहा, अगर मैंने सच बोला है, तो तुमने मुझे क्यों मारा? निःसंदेह, मुझे लगता है कि यह शुरुआत अन्यायपूर्ण, अनुचित तरीकों की है जिसमें इस सुनवाई प्रक्रिया में यीशु के साथ व्यवहार किया जाता है।

इसलिए, फिर उसे महायाजक कैफा के पास भेजा गया। हालाँकि, कैफा के बारे में कहानी बहुत संक्षिप्त है। हम केवल इतना जानते हैं कि यीशु को कैफा के पास भेजा गया था क्योंकि जब वह कैफा की सुनवाई में था तब क्या हुआ था, इसके बारे में हमारे पास यहां कुछ भी नहीं बताया गया है।

बेशक, कैफा के बारे में हम जो जानते हैं, जो हमें यहां कथा में बताया गया है, वह यह है कि श्लोक 14 में कैफा ही वह व्यक्ति है, जिसका परिचय हमें इस रूप में दिया गया था, जिसने यहूदी नेताओं को सलाह दी थी कि यह अच्छा होगा यदि कोई मनुष्य लोगों के लिए मर गया था, अध्याय 18, पद 14। तो, हम जानते हैं कि यह व्यक्ति, कैफा, राजनीतिक रूप से चतुर था, और यह

निष्कर्ष निकलता है कि यदि वे यीशु को खत्म कर देते तो पूरी संस्था बेहतर होती। इससे इस स्थिति में मसीहाई दिखावे और रोमन हस्तक्षेप की किसी भी संभावना को रोका जा सकेगा।

इसलिए जैसे ही यीशु कैफा के सामने थे, दृश्य फिर से पतरस की ओर लौट आता है। और हमारे पास अध्याय 18, श्लोक 25 से 27 में कैफा के पहले क्या हुआ था, इसकी व्याख्या के बजाय, हम पतरस की ओर लौटते हैं। और इसलिए, पतरस अभी भी हन्ना के आँगन में आग ताप रहा है, और इसलिए उन्होंने उससे पूछा, क्या तुम भी उसके शिष्यों में से एक नहीं थे, ठीक है? और पतरस कहता है, मैं नहीं हूँ।

तब महायाजक के सेवकों में से एक ने, जिसे इन सब बातों का अधिक विशेष ज्ञान था, कहा, क्या मैं ने तुम्हें उसके साथ बगीचे में नहीं देखा था? और उसी क्षण पतरस ने तीसरी बार इसका इन्कार किया, और मुर्ग बाँग देने लगा। पाठ इस बिंदु पर इस बात पर चर्चा नहीं करता है कि उस समय पीटर के दिमाग में क्या विचार आया था, लेकिन आप केवल कल्पना कर सकते हैं कि कहीं भी जाने और कुछ भी करने और मृत्यु तक यीशु का अनुसरण करने की उसकी प्रशंसनीय क्षमता के बारे में आत्म-जागरूकता अचानक उसमें आ गई थी। जब वह किसी वास्तविक दबाव या दबाव में नहीं था। उसने तीन बार प्रभु का इन्कार किया।

यह वास्तव में एक दुखद कहानी होगी यदि हमने कथा में पतरस को यहीं छोड़ दिया है, लेकिन शुक्र है कि अध्याय 21 में पतरस के बारे में हमारे पास सुनने के लिए और भी बहुत कुछ है। तो, इस बिंदु पर, यीशु, कथा पतरस से यीशु की कहानी पर वापस जाती है कहानी, और यीशु को कैफा से पिलातस के पास भेजा गया। तो, हमारे पास यीशु और पीलातस की बातचीत का वर्णन करने वाली एक लंबी कहानी है, और यह मुझे स्पष्ट लगता है कि हमारे पास तीन चक्र या तीन चरण, तीन चरण हैं, जो भी शब्द आपको लगता है कि यहां क्या हो रहा है उसका वर्णन करने के लिए सबसे अच्छा हो सकता है।

यीशु अध्याय 18 और पद 28 में पीलातस से पहले आता है। जैसा कि आपने सामग्री पढ़ते समय देखा होगा, यह काफी समय पहले हुआ था जब पिलातस ने वास्तव में यीशु को सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया था, अध्याय 18 श्लोक 28 से लेकर अध्याय तक 19 और पद 16. तो, मुझे ऐसा लगता है कि इसके तीन चरण हैं क्योंकि ऐसे तीन अवसर हैं जब पीलातस यीशु को लोगों के सामने लाता है और अनिवार्य रूप से कहता है, क्या आप निश्चित हैं कि आप चाहते हैं कि इस आदमी को क्रूस पर चढ़ाया जाए? क्या आपको यकीन है? क्या आपको यकीन है? तो शायद इस सब की पुनरावृत्ति हिब्रू बाइबिल में तीन गवाहों, दो या तीन गवाहों के सिद्धांत से संबंधित है, लेकिन स्पष्ट रूप से पीलातस की झिझक है, जो अपने मन में बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं है कि यीशु ने कुछ भी गलत किया है, लेकिन वास्तव में, जनता की इच्छाओं को पूरा किया जाएगा।

आखिरकार पीलातस झुक गया और भीड़ की इच्छा को स्वीकार कर लिया और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति दे दी। तो, आइए इन चरणों को थोड़ा विस्तार से देखें क्योंकि यहां बहुत दिलचस्प विवरण और विडंबनाएं हैं, और हम इस सुसमाचार में एक चरित्र के रूप में पीलातस के बारे में कुछ सीखते हैं। हम धार्मिक नेताओं के अविश्वास के बारे में कुछ सीखते हैं और जिस तरह से वे जो चाहते हैं उसे करने के लिए भीड़ को बरगला रहे हैं।

इसलिए, 18:28, धार्मिक नेता यीशु को कैफा के पास से रोमन गवर्नर के महल में ले गए। इसलिए, यह सुबह का समय था और औपचारिक अशुद्धता से बचने के लिए, उन्होंने महल में प्रवेश नहीं किया क्योंकि वे फसह खाने में सक्षम होना चाहते थे। लोग अक्सर अनुष्ठान की शुद्धता के मामले में धार्मिक नेताओं की ईमानदारी के बारे में टिप्पणी करते हैं, जब वे यीशु को मूल रूप से उसके बारे में झूठ बोलने और उन चीजों के बारे में झूठ बोलने के साथ बिल्कुल सही होते हैं जो उसने गलत नहीं किए थे।

सो वे उसे पीलातुस के पास ले आए, और कहने लगे, क्या अभियोग हैं? पद 29 में पीलातुस कहता है, वे एक प्रकार से टालमटोल करने वाले हैं। उनका कहना है कि अगर वह अपराधी नहीं होता तो हम उसे यहां लाते ही नहीं। तो पिलातुस ने कहा, ठीक है, फिर तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? उसे ले जाओ और उसका न्याय स्वयं करो।

आपके पास नागरिक अधिकार है। आप जैसा उचित समझें, उससे निपट सकते हैं। उन्होंने कहा, लेकिन हमें किसी को फांसी देने का अधिकार नहीं है।

तो, वे जो कह रहे हैं वह यह है कि यह एक पूंजीगत मामला है और जाहिर तौर पर फिलिस्तीन पर रोमन अधिकार क्षेत्र में, केवल रोमन प्राधिकरण ही लोगों को फांसी दे सकता है। रोमनों द्वारा केवल मृत्युदंड को ही अधिकृत किया जा सकता था। हमें किसी को फांसी देने का कोई अधिकार नहीं है।

उन्होंने विरोध किया। यह उस बात को पूरा करने के लिए हुआ जो यीशु ने कही थी कि वह किस प्रकार की मृत्यु से मरेगा। इसे समझने में थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन अध्याय 3, श्लोक 14 में यीशु ने कहा कि वह पृथ्वी से ऊपर उठाए जाने के द्वारा मरने वाला है, जैसे मूसा ने जंगल में साँप को उठाया था।

जैसा कि हमने जॉन में पहले ही कुछ बार देखा है, जब यहूदी लोग यीशु पर क्रोधित थे और ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे कि वे उसे मार डालने जा रहे थे, तो उन्होंने ऐसा पत्थर मारकर किया होगा। तो, मुझे लगता है, यहां बात घुमा-फिरा कर यह कहने की है कि रोमनों के लिए यीशु का निष्पादक बनना आवश्यक था ताकि ऊपर उठाए गए व्यक्ति के रूप में उसकी मृत्यु का तरीका अपराध में फिट हो सके। इसलिए, पिलातुस को पता चल गया कि कहानी क्या थी, आरोप क्या था और वे क्या पूछ रहे थे, पद 33 में यीशु से बात करने के लिए वापस गया।

उस ने उस से कहा, क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उस प्रश्न का सीधे तौर पर किसी न किसी तरीके से उत्तर नहीं दिया, भले ही हमारे पास पहले जॉन के सुसमाचार में यह देखने के लिए पर्याप्त कारण थे कि पाठ ने वास्तव में पुष्टि की है कि कम से कम कुछ अर्थ तो हैं जिसमें यीशु वास्तव में राजा है यहूदी। यीशु बस इतना कहते हैं, क्या यह आपका विचार है, या दूसरों ने मेरे बारे में आपसे बात की? दूसरे शब्दों में, क्या आप किसी तरह से चिंतित हैं कि मैं सिंहासन का दावेदार हूं, या क्या दूसरों ने आपको ये बातें बताई हैं? तो, इस बिंदु पर, पीलातुस थोड़ा हताश हो जाता है। क्या आप इस रोमन गवर्नर की कल्पना कर सकते हैं, जो अपने दृष्टिकोण से एक प्रकार

से पिछड़े स्थान पर है, इस उपग्रह प्रांत में एक रोमन होकर महान रोमन साम्राज्य में इन लोगों से निपट रहा है, जिनके बारे में कई लोगों को शुरू में संदेह था?

प्राचीन संस्कृति में यहूदी विरोध एक व्यापक पूर्वाग्रह था। तो पीलातुस, आप श्लोक 35 को लगभग ऐसे मान सकते हैं जैसे वह चिल्ला रहा हो या फूट-फूट कर बोल रहा हो या काफी गुस्से में कह रहा हो, क्या मैं यहूदी हूँ? और मुझे नहीं लगता कि उन्होंने यहूदी शब्द का इस्तेमाल बहुत अच्छे तरीके से किया है। मुझे उम्मीद है कि वह इसे उपहास के शब्द के रूप में उगलेंगे।

क्या मैं यहूदी हूँ? तेरे निज लोगों और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंप दिया है। दूसरे शब्दों में, आपको क्यों लगता है कि हम यहाँ हैं? मैंने यह समस्या शुरू नहीं की। आपके लोगों ने किया।

तो ऊपर क्या है? क्या कर डाले? और यीशु, फिर से, उसे सीधे उत्तर नहीं देता। हाँ या नहीं, यहाँ विशिष्ट मुद्दे हैं। यीशु ने उसका उत्तर काफी अस्पष्ट और अस्पष्ट तरीके से दिया।

मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता तो मेरे सेवक मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए लड़ते, लेकिन अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है। तो, यह अस्पष्ट उत्तर, एक अर्थ में, यह मानता है कि यीशु एक प्रकार का राजा है क्योंकि वह अपने राज्य की बात करता है।

तो, पीलातुस उस पर विचार करता है और पद 37 में कहता है, तो फिर आप एक राजा हैं। यीशु ने कहा कि तुम कहते हो कि मैं राजा हूँ। वास्तव में, मेरे जन्म लेने और दुनिया में आने का कारण सत्य की गवाही देना है।

जो कोई सत्य के पक्ष में है वह मेरी बात सुनता है। तो फिर, यीशु पीलातुस को सीधे उत्तर नहीं देता। यह स्पष्ट है कि वह स्वयं को किसी प्रकार का राजा मानता है, लेकिन यीशु कहते हैं, तुम वही हो जिसने कहा था कि मैं राजा था, लेकिन वास्तव में मैं यहाँ पृथ्वी पर इसलिए आया हूँ कि सत्य की गवाही दूँ, और यदि तुम 'सच्चाई के हो, तुम मेरी बात सुनोगे।

इसलिए, जैसा कि हम आगामी कथा में देखते हैं, दुर्भाग्य से, पीलातुस यीशु की बात नहीं सुनता है, इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि वह सत्य का नहीं है। तो, पीलातुस ने फिर सनकी ढंग से जवाब दिया और चर्चा समाप्त की, सत्य क्या है? इसलिए, पीलातुस में भी इस दर्शन का अभाव है और वह वास्तव में यीशु अपने बारे में जो कह रहा है उसे स्वीकार नहीं करता है। तो यहां हम पहले चक्र पर आते हैं, लगभग सुनवाई का पहला चरण।

इसके साथ, वह फिर से आयत 36 में यहूदियों से बात करने के लिए बाहर गया और कहा, मुझे उसके खिलाफ आरोप का कोई आधार नहीं मिला। दूसरे शब्दों में, मैं उसे आपके द्वारा लगाए गए आरोपों के लिए दोषी नहीं मानता, लेकिन चूंकि हम यहां फसल के दौरान हैं और हमारी यह परंपरा है कि रोमन अधिपति वर्ष के इस समय में यहूदी लोगों के प्रति उदार होते हैं वर्ष, और हम अपने कैदियों में से एक को रिहा करते हैं, मैं उसे आपको वापस क्यों नहीं दे देता और हम इसे वापस बुला लेंगे? हम असहमत होने पर ही सहमत होंगे और इसे इस बिंदु पर जाने देंगे। तो, इस बिंदु पर, वे, वे जो भी हैं, यह थोड़ा अस्पष्ट है, वे चिल्लाते हैं, नहीं, उसे नहीं, हमें बरअब्बा दो।

जाहिर है, जिस तरह से श्लोक 40 इसका वर्णन करता है, बरअब्बा एक व्यक्ति था जिसने एक विद्रोह में भाग लिया था। कभी-कभी बरअब्बा को चोर कहा जाता है। वास्तव में बरअब्बा जो था वह शायद कोई छोटा-मोटा चोर या जेबकतरा नहीं था, इसलिए जब वह घरों में सेंध लगाता था, तो कुछ-कुछ वैसा ही होता था।

परन्तु बरअब्बा उस प्रकार का व्यक्ति था जो सड़क पर चलने वाले लोगों को या ऐसी ही किसी चीज़ को लूट लेता था। वह एक डाकू था। वह एक विद्रोहवादी था।

वह ऐसा सिर्फ चोर बनने के लिए, किसी कारण से अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए या ऐसा ही कुछ करने के लिए नहीं कर रहा था। वह संभवतः अशांति पैदा करने और राजनीतिक विध्वंसक बनने के लिए ऐसा कर रहा था। तो, यहाँ दूसरा चक्र, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं, श्लोक 29 के आसपास शुरू होता है और 19:8 तक चलता है।

सो पीलातुस लोगों से बातें करने को निकला, और उन से कहा, आओ, हम यीशु को छोड़ दें। नहीं, वे कहते हैं कि वे बरअब्बा को पसंद करते हैं। तो अब पीलातुस एक बार फिर यीशु के साथ काम कर रहा है।

वह उसे स्पष्ट रूप से अधिक निजी स्थान पर वापस ले जाता है, या शायद सार्वजनिक रूप से ऐसा करता है। यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। और उसने उसे कोड़े लगवाये।

अब जब बात न्यायशास्त्र और उन लोगों के अधिकार की आती है, जिन पर आरोप लगाया गया है, तब तक उन्हें निर्दोष माना जा सकता है, जब तक कि वे दोषी न हों और उनके साथ उचित व्यवहार न किया जाए, उन्हें क्रूर और असामान्य सज़ा न दी जाए और उन्हें अधिकार दिया जाए, तो यह हमारी आधुनिक संवेदनाओं के बिल्कुल अनुरूप नहीं है। एक वकील मौजूद है और वे सभी चीज़ें जिनके बारे में हमारा मानना है कि वे महत्वपूर्ण हैं। और मैं ठीक ही ऐसा सोचता हूँ। आप देखिये, यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं चल रहा है।

तो, यीशु ने पीलातुस को कोड़े लगवाये। जैसा कि आप शायद जानते हैं, कोड़े मारने की रोमन प्रथा, जिसे मेल गिब्सन की फिल्म में इतनी स्पष्टता से चित्रित किया गया है, एक भयानक चीज़ है। और लोगों को फैलाया जाता है, बाहें फैलाई जाती हैं, बांध दिया जाता है, और कोड़े से मारा जाता है जिसमें कई चमड़े के पेटी होते हैं।

पेटी में बहुत सी नुकीली वस्तुएं लगी होती हैं जो बहुत अधिक नुकसान पहुंचाती हैं। तो यह एक भयानक प्रथा थी और यह निश्चित रूप से यीशु के लिए बेहद कष्टदायी और दर्दनाक और खूनी होगी। इतना ही नहीं, 19-2 सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैजनी वस्त्र पहनाया।

और यहां हम चोट पर व्यंग्यात्मक अपमान जोड़ना शुरू करते हैं, उसे एक राजा के रूप में संदर्भित करना शुरू करते हैं, यहूदियों के राजा की जय हो। फिर, मुझे लगता है कि आपको यहां की सांस्कृतिक स्थिति को समझना होगा जहां आपके पास कब्जा करने वाली ताकतें हैं, ये रोमन

सैनिक हैं जिनका इस धूल भरे परिधीय प्रांत में रोमन साम्राज्य के प्रति यह कर्तव्य है। और संभवतः वे शुरू से ही यहूदी लोगों का इतना अधिक सम्मान नहीं करते हैं।

और इसलिए, वे मूलतः यीशु का मज़ाक उड़ा रहे हैं। शायद यहाँ अंतर्धारा कुछ ऐसा ही कहना है। यहाँ बताया गया है कि रोमियों ने यहूदियों के साथ कैसा व्यवहार किया।

यहाँ बताया गया है कि रोमन सम्राट तथाकथित यहूदियों के राजा के साथ कैसा व्यवहार करता है। इसलिए, उन्होंने उसे कांटों का ताज पहनाया। उन्होंने व्यंग्यात्मक तरीके से उसे बैंगनी रंग का वस्त्र पहनाया, जिससे यह प्रतीत हो कि उसमें कोई कुलीनता है, और उसके चेहरे पर तमाचा मारा, जैसे उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, यहूदियों का राजा।

इसलिए, पीलातुस ने सोचा कि शायद यीशु को कोड़े मारने से भीड़ खुश हो जाएगी। तब वह फिर उनके पास बाहर आया और कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास बाहर ले आता हूँ, कि तुम जान लो, कि मैं उस में दोष लगाने का कोई आधार नहीं पाता। इसलिये वह यीशु को कांटों का मुकुट और बैंगनी वस्त्र पहिनाकर बाहर ले आया, और कहा, यह वह पुरुष है।

जैसे ही महायाजकों और उनके हाकिमों ने उसे देखा, वे फिर चिल्लाने लगे, क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर चढ़ाओ। तो, हम यहां परीक्षणों के दूसरे चरण या दूसरे चरण या दूसरे चक्र से तीसरे चरण की ओर बढ़ते हैं। पीलातुस ने अध्याय 19 और श्लोक 6 में यह कहकर उनके सूली पर चढ़ने की पुकार का विरोध किया, क्यों? तुम उसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ।

आप इसे करते हैं। मुझे यहां कोई दिक्कत नहीं है। यहूदी नेताओं ने जोर देकर कहा कि हमारे पास एक कानून है और उस कानून के अनुसार, उसे मरना होगा क्योंकि उसने ईश्वर का पुत्र होने का दावा किया था।

इससे पीलातुस चिंतित हो गया क्योंकि आयत 8 के अनुसार, वह डर गया था। उस ने यीशु से कहा, तू कहां से है? यह स्पष्टीकरण कि यीशु ने दावा किया था कि वह ईश्वर का पुत्र है, कैसे एक रोमन अधिकारी जो कुछ हद तक बुतपरस्ती या सम्राट पूजा पंथ में डूबा हुआ था, जब उसने ईश्वर के पुत्र वाक्यांश को सुना, तो उसने सोचा होगा कि उसने दावा किया होगा ईश्वर की ओर से किसी प्रकार का दूत, किसी प्रकार की दिव्य आकृति, किसी प्रकार का प्रतिनिधि होना। तो, पीलातुस के दृष्टिकोण से, इससे उसे थोड़ी चिंता, थोड़ी चिंता उत्पन्न हुई।

अतः वह यीशु को तीसरी बार महल में वापस ले आया और उस से कहा, तू कहां से है? यीशु ने उस प्रश्न का बिल्कुल भी उत्तर नहीं दिया। पीलातुस ने उस से कहा, क्या तू नहीं जानता, कि मुझे में तुझे छुड़ाने, वा क्रूस पर चढ़ाने की शक्ति है? प्रतिक्रिया स्वरूप यीशु को धमकाने का प्रयास। इस बिंदु पर, यीशु ने सरलता से उत्तर दिया, यदि हम तुम्हें ऊपर से नहीं दिए गए तो तुम्हारा मुझ पर कोई अधिकार नहीं होगा।

इसलिये जिस ने मुझे तुम्हारे हाथ पकड़वाया, वह बड़े पाप का दोषी है। स्पष्ट रूप से उच्च पुरोहित प्राधिकार का जिक्र है जो यीशु को पीलातुस के सामने लाया। इसलिए, पीलातुस को अब

भी यकीन था कि यीशु ने सूली पर चढ़ाए जाने लायक कुछ भी नहीं किया है, वह यीशु को आज़ाद करने की कोशिश करता रहता है।

यीशु को फिर से लोगों के सामने प्रत्यक्ष रूप से लाया गया, और यहूदी नेता चिल्लाते रहे, यदि तुमने इस आदमी को जाने दिया, तो तुम सीज़र के मित्र नहीं हो। जो कोई राजा होने का दावा करता है वह सीज़र का विरोध करता है। तो, श्लोक 13, श्लोक 8 के समान, जब पिलातुस ने यह नवीनतम टिप्पणी सुनी, तो उसे एहसास हुआ कि वह सम्राट के साथ परेशानी में पड़ जाएगा।

यदि उसने यीशु को जाने दिया तो शायद उन्हें उससे कठिनाई हो सकती थी। तो, पद 13 में कहा गया है, कि वह यीशु को बाहर ले आया और उस स्थान पर जो पत्थर का फुटपाथ कहलाता है, न्यायी के आसन पर बैठाया, और यहूदियों से कहा, यहां तुम्हारा राजा है। उन्होंने कहा, इसे ले जाओ, इसे ले जाओ, इसे सूली पर चढ़ाओ।

तो बार-बार, अब तीसरी बार उसकी फांसी की मांग कर रहे हैं। पीलातुस ने कहा, क्या मैं तेरे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं? वे वफादार शब्द कहते हैं जो शायद इस पूरे अध्याय के सभी शब्दों में सबसे मार्मिक हैं, क्या मैं तुम्हारे राजा को सूली पर चढ़ा दूँ? वे कहते हैं कि सीज़र के अलावा हमारा कोई राजा नहीं है। अन्त में पीलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये उनके हाथ में सौंप दिया।

इसलिए, यहां के यहूदी नेताओं की ओर से यीशु के खिलाफ नफरत की ज्वर की तीव्रता स्पष्ट है और कई मायनों में काफी दुखद है। उनके अंतिम शब्द, हमारे पास सीज़र के अलावा कोई राजा नहीं है, ऐसे शब्द हैं जिन्हें पुराने नियम में ईश्वर के राजा होने और डेविड के पुत्र के इज़राइल के सच्चे राजा होने के बारे में सिखाई गई बातों के प्रकाश में बनाए रखना मुश्किल होगा। और निस्संदेह, ऐसा कहकर वे कह रहे हैं कि वे वफादार रोमन प्रजा हैं, लेकिन पीलातुस, यदि आपने उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया, तो आप नहीं हैं।

आप सीज़र के अलावा एक और राजा को स्वीकार कर रहे हैं। तो, यह अध्याय 18, पद 1 से लेकर अध्याय 19, पद 16 तक यीशु की गिरफ्तारी और मुकदमे की कथा होगी। हालाँकि, जैसा कि आप अध्याय 19 से अंत तक देखते हैं, कथा प्रवाहित होती रहती है, अध्याय, अब हम अध्याय 19 के मध्य में हैं।

तो, अध्याय 19 और श्लोक 17 से शुरू करते हुए, हमारे पास सूली पर चढ़ने की कहानी है, जो मानवता के इतिहास और दुनिया के इतिहास का सबसे काला दिन है। तो, हमें यहां बताया गया है कि सैनिक यीशु को ले जाते हैं, कहानी काफी छोटी और क्लिप की गई है। वे उसे खोपड़ी के स्थान गोलगोथा ले गये।

उन्होंने उसे दो अन्य लोगों के साथ क्रूस पर चढ़ाया, दोनों तरफ एक और बीच में यीशु। पीलातुस ने एक सूचना तैयार की थी, एक शीर्षक, यदि आप चाहें, तो वहां लगाने के लिए एक तख्ती, नासरत के यीशु, यहूदियों के राजा। निःसंदेह, यह पीलातुस का एक राजनीतिक बयान है कि वह यीशु ने जो कहा उसे स्वीकार कर रहा है, कि वह वास्तव में यहूदियों का राजा है, लेकिन वह

अनिवार्य रूप से यह कह रहा है कि रोमन यहूदी राजाओं या ऐसा करने का दिखावा करने वाले किसी भी राजा के साथ यही करते हैं। रोम के सम्राट के स्थान पर कोई प्राधिकारी।

तब बहुत से यहूदियों ने इस चिन्ह को पढ़ा था कि जिस स्थान पर यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था वह शहर के पास था, और यह चिन्ह अरामी, लैटिन और ग्रीक में लिखा गया था, यानी ऐसी भाषा में जिसे हर कोई पढ़ सकता था। जब यहूदियों के महायाजकों को इस बात का पता चला, तो उन्होंने कहा, हे यहूदियों के राजा, इसे चिन्ह पर न लगाना। सीधे शब्दों में कहें तो इस आदमी ने यहूदियों का राजा होने का दावा किया।

पिलातुस ने उत्तर दिया, मैं ने जो लिखा है सो लिख दिया है। मुझे लगता है कि पिलातुस का इन लोगों पर पलटवार करने का यह आखिरी तरीका है, जिन्होंने उसे एक तरह से झुका दिया है और उससे कुछ ऐसा करवाया है जिसके बारे में वह जानता था कि उसके दिल में यह सही काम नहीं है। तो, पाठ बस इतना कहता है, कि जब सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, तो उन्होंने उसके कपड़े ले लिए।

उन्होंने उन्हें चार हिस्सों में बाँट दिया, और उन्होंने यह देखने के लिए जुआ खेला कि कपड़ा किसे मिल सकता है। यह, जॉन के अनुसार, पवित्रशास्त्र, भजन 22:18 की पूर्ति है, उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे परिधान के लिए चिट्ठी डाली। तो दूसरी घटना के साथ-साथ जो यीशु के सूली पर चढ़ने के साथ चलती है, यह न केवल उस तरीके के बारे में बात कर रही है जिसमें उसके परिधान के साथ व्यवहार किया गया था, बल्कि यह भी कि यीशु अपनी माँ मरियम के बारे में कैसे सोच रहा था।

यीशु के क्रूस के पास उसकी माँ और उसकी माँ की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। तो, हमारे पास वहाँ तीन अलग-अलग मैरी हैं। जब यीशु ने अपनी माँ को और उस शिष्य को, जिससे वह प्रेम करता था, पास खड़े देखा, तो अपनी माँ से कहा, हे नारी, यह तेरा पुत्र है, और उस शिष्य से, यहाँ तेरी माँ है।

उस समय से, शिष्य उसे अपने घर में ले गया। इस परिच्छेद की तुलना अध्याय 2 में यीशु और उसकी माँ के बारे में हमारे द्वारा कहे गए अंतिम शब्दों से करना दिलचस्प है, जहाँ यीशु मूल रूप से अपनी माँ को दूर कर देते हैं और कहते हैं, यह मेरा नहीं है, मेरा समय अभी नहीं आया है। इस शादी में उनके पास शराब होगी या नहीं, इसकी चिंता करके मुझे क्या करना? फिर भी, वह वही करता है जो मैरी उससे विनीत तरीके से करने के लिए कहती है।

वह पानी को शराब में बदल देता है। हालाँकि, इस पाठ में, अध्याय 19 में, वैसे भी जिसमें यीशु को या तो मैरी का अनादर करने वाले या अध्याय 2 में मैरी को हाथ की दूरी पर रखने के रूप में देखा जा सकता है, मना कर दिया गया है क्योंकि अब यीशु, जैसा कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जा रहा है, क्रूस पर लटका हुआ है, के लिए चिंता दिखाता है उसकी माँ अपने प्रिय शिष्य से उसकी देखभाल करने के लिए कहती है और साथ ही वह अपने प्रिय शिष्य की यथासंभव देखभाल करने के लिए भी कहती है। इसलिए यह दिलचस्प है कि चूंकि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, इसलिए पाठ

में क्रूस पर चढ़ने, प्रक्रिया, दर्द या यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए इस्तेमाल किए गए उपकरणों के बारे में कोई विवरण नहीं दिया गया है।

हम प्राचीन संस्कृति से जानते हैं कि सूली पर चढ़ाये जाने की प्रक्रिया एक ही तरह से नहीं होती थी। हम जानते हैं कि सभी क्रॉस, जिन पर लोगों को क्रूस पर चढ़ाया गया था, उन विशिष्ट क्रॉसों के आकार के नहीं हैं जिन्हें हम आज देखते हैं, खाली क्रॉस और यीशु के शरीर वाले क्रूस। कुछ क्रॉस का आकार T के समान था।

कुछ को तो एक्स भी बना दिया गया। कुछ हद तक, यह उस सामग्री पर निर्भर था जो अधिकारियों के पास तब उपलब्ध थी जब वे कोई निष्पादन करना चाहते थे। ऐसा भी हमेशा नहीं होता कि लोगों को सूली पर चढ़ा दिया जाए जैसा कि हम जानते हैं कि यीशु अन्य ग्रंथों से थे।

कभी-कभी लोगों को बस रस्सियों से सूली पर लटका दिया जाता था। जॉन का पाठ इसके बारे में कुछ भी नहीं कहता है। यह केवल इतना कहता है कि उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया और इस बारे में विवरण देने के बजाय कि उन्होंने उसे कैसे क्रूस पर चढ़ाया, यह उसके परिधान के साथ धर्मशास्त्र की पूर्ति के बारे में विवरण देता है और कैसे यीशु ने मरते दम तक अपनी माँ की देखभाल की।

इसके बाद पाठ यीशु की मृत्यु के बारे में बहुत संक्षिप्त भाषा में बताता है। पद 28, बाद में यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ पूरा हो गया, इसलिये कहा, कि पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हो, मैं प्यासा हूँ। वहाँ वाइन सिरके का एक जार था इसलिए उन्होंने उसमें एक स्पंज भिगोया और उसे उसके पास रखा ताकि वह पेय ले सके।

एक बार जब उसे पेय मिल गया, तो उसने कहा, यह समाप्त हो गया है। इतना कहकर उसने सिर झुका लिया और प्राण त्याग दिये। यह बहुत ही सरल भाषा बताती है कि मानवता के इतिहास, दुनिया के इतिहास में अब तक हुई सबसे महत्वपूर्ण घटना क्या है।

अंग्रेजी में वाक्यांश, यह समाप्त हो गया है, ग्रीक में एक शब्द है जो हमें बताता है कि मर जाओ। मुझे लगता है कि यह सीधे तौर पर अध्याय 16 में यीशु ने जो कहा था, उसे संदर्भित करता है, मैंने दुनिया पर विजय पा ली है। जब उन्होंने कहा कि मैंने दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है, तो उनके मन में यही क्षण था।

जब उसने अपने लोगों के लिए क्रूस पर अपना काम पूरा किया, तो उसने दुष्ट पर विजय पा ली थी और दुनिया में मौजूद परमेश्वर के प्रति सभी पापपूर्ण विरोध पर विजय पा ली थी। कुछ लोग अभिव्यक्ति को हार के रोने के रूप में देखते हैं, यह समाप्त हो गया है। मेरा काम हो गया, मैं हार गया, अब सब कुछ खत्म हो गया है।

जो कुछ भी था वह प्रभु यीशु की सेवकाई थी जिसमें वह सब कुछ करना था जिसे करने के लिए पिता ने उसे बुलाया था और उसे ईमानदारी से करना, पिता की इच्छा को पूरा करना, और उन कार्यों को करना जो पिता ने उसे करने के लिए दिए थे। जैसा कि उसने जॉन अध्याय 17 की शुरुआत में प्रार्थना की थी, इस संभावना में कि यहां क्या होगा, मैंने वह काम पूरा किया जो आपने

मुझे करने के लिए दिया था। अब तक किसी भी प्रकार की हार की स्वीकृति या किसी प्रकार की उपेक्षा का रोना, यह विजय का जयघोष है, यदि कुछ भी हो।

यह केवल यह स्वीकार करना है कि यीशु ने वास्तव में वह सब पूरा किया है जो पिता ने उसे पृथ्वी पर भेजते समय करने के लिए दिया था। तो, यीशु मर गया है और अब यह तैयारी का दिन है, जो विशेष सप्ताह से एक दिन पहले है। यीशु के शरीर को क्रूस से हटा दिया गया ताकि पवित्र दिन के दौरान उसे वहाँ न छोड़ा जाए।

आमतौर पर, पीड़ितों को इन पवित्र दिनों से पहले मरने के लिए ताकि उन्हें इन समयों के दौरान सूली पर चढ़ाया न जाए, सूली पर चढ़ाए गए पीड़ितों के पैर तोड़ दिए जाएंगे ताकि वे अपने शरीर को सहारा देने में असमर्थ हो जाएं, उनका सारा वजन लटक जाएगा उनकी बांहों से, और इसलिए उनके लिए जल्द ही सांस लेना बहुत मुश्किल हो जाएगा और वे दम घुटने से मर जाएंगे। इसलिए, सैनिकों ने आकर उन दो लोगों के पैर तोड़ दिए जिनके साथ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, लेकिन जब वे उसके पास आए, तो उन्होंने देखा कि वह पहले ही मर चुका था। किसी कारण से, उसके पैर तोड़ने के बजाय, एक सैनिक ने अपने भाले से यीशु की बगल में छेद कर दिया, जिससे अचानक खून और पानी का प्रवाह शुरू हो गया।

यह अजीब विवरण 1 यूहन्ना 5 में याद किया गया है और बताया गया है कि इस तरह से यीशु दुनिया में आए, न केवल रक्त के साथ बल्कि रक्त और पानी के साथ। जिस मनुष्य ने यह देखा, उसी ने यह गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है। यह श्लोक अध्याय 19 और श्लोक 35 में एक बार फिर प्रिय शिष्य का संदर्भ है।

निःसंदेह, यह सब धर्मग्रंथों, श्लोक 36 को पूरा करने के लिए हुआ, जो कि बलि के पीड़ितों से संबंधित कई पुराने नियम के ग्रंथों से उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़े जाने का संदर्भ है। श्लोक 37 में भी, एक अन्य धर्मग्रंथ जो कहता है कि वे उस पर ध्यान देंगे जिसमें उन्होंने जकर्याह अध्याय 12 और श्लोक 10 से छेद किया है। यीशु की गिरफ्तारी, उसके परीक्षण, उसके क्रूस पर चढ़ने और उसके दफन की कथा फिर श्लोक 38 से यहां समाप्त होती है 42 एक तरह से जो अध्याय 3 तक जाते हुए हमारे लिए कुछ चीजों को जोड़ता है। बाद में, श्लोक 38 में, अरिमथिया के जोसेफ ने पिलातस से यीशु के शरीर के लिए कहा।

अब यूसुफ यीशु का शिष्य था, परन्तु गुप्त रूप से क्योंकि वह यहूदी नेताओं से डरता था। पीलातस की अनुमति से वह आया और शव को ले गया। तो जाहिर तौर पर यह एक सार्वजनिक कृत्य था।

यह कुछ ऐसा नहीं था जो गुप्त रूप से किया गया था। उसके साथ निकोडेमस भी था, जो पहले रात में यीशु से मिलने आया था। हम उस व्यक्ति को जोड़ सकते हैं जिसने परिषद से यह सुनिश्चित करने के लिए भी कहा था कि अध्याय 7 के अंत में उन्होंने यीशु के साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा उन्होंने किया था। इसलिए, यीशु के शरीर को ले जाना और उसे यहूदी के अनुसार मसालों और लिनन की पट्टियों में लपेटना दफनाने की रीति-रिवाजों के अनुसार, उन्होंने उसे एक बगीचे में एक नई कब्र में रख दिया।

चूँकि यह यहूदियों का दावत से पहले की तैयारी का दिन था, कब्र पास में ही थी। उन्होंने यीशु को वहाँ लिटा दिया। तो, कथा का प्रवाह इस प्रकार काम करता है।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, सिनोटिक गॉस्पेल में इसका प्रत्यक्ष विवरण है। हम जॉन द्वारा किसी चीज़ का वर्णन करने के तरीके और सिनोटिक्स के तरीके के बीच सभी समानताओं और अंतरों पर गौर करने के लिए समय नहीं लेंगे, लेकिन आप देख सकते हैं कि यहां काफी मात्रा में जानकारी है जो केवल में पाई जाती है। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के विपरीत जॉन का सुसमाचार। यह निश्चित रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए है कि जॉन यीशु के जीवन में कई चीजों पर एक अद्वितीय और एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है।

हम यहां कुछ भौगोलिक विवरणों के बारे में सोचने के लिए बस एक क्षण लेना चाहते हैं ताकि न केवल यह समझने की कोशिश की जा सके कि क्या हुआ था, बल्कि कुछ घटनाएं और वे कहां घटित हुई होंगी। फिर, यहाँ हम टेम्पल माउंट में हैं। हम मानचित्र पर उत्तरी दिशा देख रहे हैं।

यीशु मन्दिर में उपदेश देते रहे हैं। कई लोगों का मानना है कि अपर रूम डिस्कोर्स, हमारे पास इसे ऐसा कहने के लिए जॉन में कोई आधार नहीं है, फेयरवेल डिस्कोर्स, हम इसे ऐसा कहने जा रहे हैं, यह यहां पर है जिसे वेस्टर्न हिल कहा जाएगा, कभी-कभी आज भी माउंट सिंथ्योन कहा जाता है। नए नियम के समय में, निस्संदेह, प्राचीन काल में, माउंट सिंथ्योन टेम्पल माउंट, डेविड के शहर का दक्षिणी विस्तार था।

तो, परंपरागत रूप से कहें तो, महायाजक कैफा का घर शहर के इस क्षेत्र में था। इसके अलावा शहर के इस क्षेत्र में वर्तमान जाफ़ा गेट के पास हेरोदेस का महल था। यह संभव है कि शहर के इसी क्षेत्र में पीलातुस के समक्ष यीशु का परीक्षण हुआ हो।

आप अक्सर पारंपरिक रूप से यह पढ़ाते हुए पाते हैं कि रोमन किले एंटोनिया में पीलातुस के सामने यीशु पर मुकदमा चलाया गया था, जिसका हमने पहले उल्लेख किया होगा, वह मंदिर के अहाते के उत्तर-पश्चिम की ओर था, मुझे लगता है कि यह यहाँ और ऊपर होगा, क्षमा करें, जहाँ ये वर्ग यहाँ हैं। किला एंटोनिया। यह एक बहस का मुद्दा है।

मुझे लगता है कि आज अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि यह यहां गवर्नर के महल में था। तब यीशु पर यहीं मुकदमा चलाया गया होता, यहाँ टेम्पल माउंट पर नहीं। जिस स्थान पर यीशु अपने शिष्यों के साथ बगीचे में गए थे, उसे पारंपरिक रूप से जैतून पर्वत और टेम्पल माउंट के बीच किद्रोन घाटी में गेथसेमेन के बगीचे के रूप में याद किया गया है।

तो, सबसे अधिक संभावना है कि किसी समय यीशु इस क्षेत्र में गये होंगे। इसमें कहा गया है कि उसने अध्याय 18, श्लोक 1 में किद्रोन घाटी को पार किया, जो यहीं घाटी होगी। यीशु ने स्पष्टतः घाटी के पश्चिमी हिस्से को पूर्वी हिस्से की ओर छोड़ दिया था।

आज यरूशलेम में इस सामान्य क्षेत्र में एक चर्च ऑफ ऑल नेशंस है, इसे कहा जाता है। और आप देख रहे हैं कि हमारे यहां और यहां बहुत सारे जैतून के पेड़ हैं। यरूशलेम में पर्यटकों को

आम तौर पर जैतून के पहाड़ पर लाया जाता है और आप एक रास्ते से चलते हुए यहां आते हैं और आप यहीं पर एक दीवार के गेट के माध्यम से गेथसमेन गार्डन की इस स्मृति में प्रवेश करते हैं।

और यदि आप जमीनी स्तर पर हैं तो यह कुछ इस तरह दिखाई देगा। ध्यान दें कि जैसे ही आप गेथसमेन के बगीचे में प्रवेश करते हैं, आप सीधे टेम्पल माउंट के चारों ओर की दीवार को देख रहे होते हैं। हालाँकि छवि बिल्कुल स्पष्ट नहीं है, आप यहाँ उमर की वर्तमान मस्जिद का स्वर्ण गुंबद, तथाकथित चट्टान का गुंबद, देखते हैं, जो कि मंदिर के ठीक पास कहीं है, मंदिर का आंतरिक भाग होगा रहा।

तो, मुझे लगता है, इसकी बहुत संभावना है कि यीशु के दिनों में, यदि वह वास्तव में इस क्षेत्र में होता, तो वह अभी भी मंदिर के परम पवित्र क्षेत्र को देख पाता, कम से कम उस इमारत के शीर्ष को जहां यह है रखा गया था। तो यहाँ आपके पास वे सभी जैतून के पेड़ हैं जो आज हैं। यदि आप उस गेट से गुजरें, तो इस प्रकार की चीज़ आप वहां देखेंगे।

जैतून के पेड़ काफी पुराने हैं, वे काफी कटे-फटे हैं और मुझे बताया गया है कि हमारे जैतून के पेड़ उस तरह के पेड़ हैं जो पिछले पेड़ों की जड़ों से उगते हैं। इसलिए, यदि आप यरूशलेम में हैं, तो आपका मार्गदर्शक संभवतः आपको ऐसे शब्द बताएगा कि ये जैतून के पेड़ यीशु के दिनों में यहां थे, जो निश्चित रूप से हम नहीं जानते हैं, लेकिन यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे आनुवंशिक वंशजों से संबंधित हैं उन दिनों जो पेड़ थे। मेरा मतलब है, कौन जानता है? मैं सीधे तौर पर नहीं जानता, और मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो जानता हो या जो वास्तव में जान सकता हो।

तो, यह कुछ इस तरह दिखता होगा। मुझे लगता है कि हमें इसके बारे में यही कहना चाहिए। तो, जेरूसलम मॉडल, जो वर्तमान में इज़राइल संग्रहालय के पास है, का दृश्य कुछ इस तरह होगा।

इसलिए, यदि यीशु ऊपरी कमरे में होते, तो ऊपरी कमरा इस अवसाद के दूसरी तरफ होता, संभवतः इस क्षेत्र में जिसे उस समय पश्चिमी यरूशलेम के रूप में देखा जाता। किसी समय, उन्होंने किद्रोन घाटी में मंदिर के साथ-साथ अपना रास्ता बनाया। बेशक, हमारे यहां जेरूसलम मंदिर मॉडल में किद्रोन घाटी नहीं है।

हमारे पास बस एक छोटी सी खाई है, और जैतून का पहाड़ यहीं पर होता जहां मैं अपना हाथ रख रहा हूं। और इसलिए, गेथसमेन का बगीचा, जैतून, और वह सब जो हम अभी देख रहे हैं, इस आसपास के क्षेत्र में रहे होंगे। और यीशु घाटी से ऊपर देख रहे होंगे और मंदिर के अहाते की इस पूर्वी दीवार को देख रहे होंगे, शायद मंदिर के अहाते के भीतरी हिस्से को देख रहे होंगे, जो कि वहीं पर मंदिर है।

इसे इस दृष्टिकोण से देखें, पश्चिम से, या हां, पूर्व से पश्चिम तक, यहां टेम्पल माउंट, टेम्पल प्रॉपर शायद इसी आसपास कहीं रहा होगा। रोमन किला एंटोनिया, जिसके बारे में लोग सोचते हैं कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह इसी स्थान पर पुराने घेरे के उत्तर-पश्चिमी कोने में कहीं रहा

होगा। गवर्नर का महल, जहां आज अधिकांश लोगों को यह अधिक संभावना लगती है कि पीलातुस से पहले यीशु पर मुकदमा चलाया गया होगा, वर्तमान जाफ़ा गेट के पास इसी क्षेत्र में कहीं है।

तस्वीर को देखकर मेरे लिए यह कहना मुश्किल है कि सड़क पुराने शहर की दीवार के साथ कहां चलती है, लेकिन मुझे लगता है कि शायद यह यहीं से होकर गुजरती है। मुझसे गलती हो सकती है। मुझे इस क्षेत्र की हवाई तस्वीरें देखने की आदत नहीं है।

इसलिए, यीशु के क्रूस पर चढ़ने के पारंपरिक दृष्टिकोण में, हम फिर से मंदिर मॉडल पर स्विच कर सकते हैं और इसे देख सकते हैं क्योंकि यह प्राचीन काल में दिखाई दे सकता था। यहाँ का किला उत्तर-पश्चिमी कोने के उत्तर की ओर, जाफ़ा गेट क्षेत्र, और यरूशलेम के वर्तमान जाफ़ा गेट के दक्षिण में इसी आसपास कहीं रोमन गवर्नर द्वारा उपयोग किया जाने वाला हेरोदेस का महल है। इसलिए, यदि आप आज इज़राइल जाएं और यरूशलेम के पुराने शहर में घूमें, तो वे आपको वाया डोलोरोसा ले जाएंगे।

वाया डोलोरोसा मूल रूप से इस सामान्य क्षेत्र से निकलती है और आपको आसपास के क्षेत्र में एक छोटी सी पहाड़ी पर ले जाती है जहां इस मानचित्र पर यह शहर की दीवार के बाहर इस क्षेत्र में होगा जो कि नए नियम के समय में था। आपको याद होगा यूहन्ना 19 में हमने पढ़ा था कि वे यीशु को शहर के बाहर ले गये। यदि हम यरूशलेम की आधुनिक हवाई तस्वीर को फिर से देखें, इस क्षेत्र में फिर से किले एंटोनिया और यहां यह ग्रे गुंबद, वास्तव में दो गुंबद हैं, एक संकीर्ण और इसके पीछे एक चौड़ा, यह पवित्र सेपुलचर का चर्च होगा यरूशलेम में।

तो परंपरागत रूप से वाया डोलोरोसा इस क्षेत्र से यहीं इस क्षेत्र तक जाती है। और इसे उस स्थान के रूप में देखा जाएगा जहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। हालाँकि, आज कई विद्वानों की राय है कि यीशु का परीक्षण यहाँ नहीं हुआ होगा, इसे इसी आसपास आयोजित किया गया होगा ताकि हम फिर से मान लें कि पवित्र सेपुलचर चर्च सबसे विश्वसनीय स्थान है जिसके बारे में हम जानते हैं कि यह कहाँ है जीसस को सूली पर चढ़ा दिया गया होता, वे यहां से यहां नहीं बल्कि यहां से यहां चल रहे होते।

हम यहां केवल संभावनाओं के बारे में बात कर रहे हैं जिनके बारे में हम निश्चित रूप से नहीं जानते हैं। तो, वर्तमान वाया डोलोरोसा कुछ ऐसा था जो 14वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था और तब से इसे एंटोनिया किले से पवित्र सेपुलचर चर्च तक जोड़ा गया है। लेकिन इस पर बहस हो सकती है कि क्या किसी पायलट ने फोर्ट्रेस एंटोनिया से या जाफ़ा गेट के पास हेरोदेस के पूर्व महल से मुकदमे की अध्यक्षता की होगी।

मुझे लगता है कि इसकी अधिक संभावना है कि यह जाफ़ा गेट के पास गवर्नर के महल में हुआ होगा। हमने अध्याय 19 में पोंटियस पिलातुस के बारे में कुछ संकेत देखे हैं, तो आइए एक पल के लिए पीलातुस के बारे में कुछ नोटिस करें। इसकी खोज 1961 में कैसरिया में की गई थी, यह एक पत्थर का खंड था जिसे द्वितीयक उपयोग के रूप में जाना जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि इसे इसके मूल भवन में इसके मूल स्थान से हटा दिया गया था और इसे किसी अन्य भवन में एक ब्लॉक के रूप में उपयोग किया गया था। सामान्य तौर पर प्राचीन काल में यह बिल्कुल भी असामान्य बात नहीं है और प्राचीन इजराइल में तो बिल्कुल भी नहीं। पत्थर के ब्लॉक कीमती थे और जब किसी युद्ध या किसी अन्य कारण से शहर का एक स्तर ढह जाता था, तो आप उसे फिर से बनाने के लिए जो कुछ भी बचा हुआ था उसका उपयोग करते थे।

तो, इसे 1961 में कैसरिया में खोजा गया था। आप यहां शिलालेख, टिबेरियस का थोड़ा सा हिस्सा देख सकते हैं। हम आपको बस एक पल में इसका बेहतर दृश्य दिखाएंगे।

संभवतः यह पढ़ा जाता है कि यहूदिया के पोंटियस पिलाट प्रीफेक्ट ने सम्राट टिबेरियस को समर्पित यहां एक इमारत बनवाई थी। यदि आप आज कैसरिया जाते हैं, तो आप उस पत्थर की प्रतिकृति देखेंगे और हम यहां लैटिन में पिलाटस शब्द और उसके ऊपर टिबेरियस सीज़र का संदर्भ पढ़ सकेंगे। इसकी तुलना अन्य शिलालेखों से करने से जो कुल मिलाकर बचे हैं, वे इस बात का बहुत अच्छा अंदाजा लगाने में सक्षम हैं कि इस तरह के शिलालेख कैसे दिखते होंगे और इस तरह वे यहां जो सबसे अधिक संभावना रही होगी उसके पूर्ण संस्करण का पुनर्निर्माण करते हैं।

तो, हमने जॉन 19 की कथा में यीशु के दफन के बारे में भी पढ़ा है। जाहिर है, यीशु को एक रोलिंग स्टोन कब्र के रूप में जाना जाता है, वहां दफनाया गया था। मुझे लगता है कि हमने आपको पिछली स्लाइड में गलील में माउंट कार्मेल और मेगिदो के बीच राजमार्ग के ठीक बगल में एक लुढ़कते पत्थर के मकबरे की यह तस्वीर दिखाई होगी।

एक और कोण जो आपको यह अंदाज़ा देता है कि यह कब्र कैसी दिखती थी। दरअसल, वहां कब्रों का एक परिसर है। यह उनमें से एक है जिसे आप आगे बढ़ते हुए देख सकते हैं।

एक और लुढ़कता हुआ पत्थर का मकबरा खिरबेट मिद्राश में पाया गया है, जो यरूशलेम से 19-20 मील या दक्षिण-पश्चिम में शेफेला में है। और यह कॉम्प्लेक्स उस कॉम्प्लेक्स से अधिक विकसित है जिसे हमने अभी पहले देखा था। इजराइल में आज आप अनगिनत लुढ़कते पत्थर की कब्रें देख सकते हैं, इसलिए हमें इस बात का अच्छा अंदाजा है कि यीशु को संभवतः किसमें दफनाया गया था।

यदि आप चाहें तो यहाँ दरवाज़ा है, पत्थर, और यह कब्र के प्रवेश द्वार को ढकते हुए आधा लुढ़का हुआ है। इस पर थोड़ा और प्रत्यक्ष नजर डालें। ऐसा लगता है।

अंदर, जहां आप अभी भी लुढ़कते पत्थर के किनारे को देख सकते हैं, वह तिजोरी है जिसमें मकबरे की मुख्य तिजोरी है, जिसमें विभिन्न लोकी, शीर्ष लड़के हैं, जहां शवों को दफनाया गया था। और आप यहां जमीन पर पड़े हुए उस प्रकार के पत्थर को देख रहे हैं जिसका उपयोग इन छिद्रों को बंद करने के लिए किया गया होगा। यह शिप्लाप लकड़ी के एक टुकड़े की तरह होगा जिसमें एक किनारा खुदा होगा जो इस उद्घाटन में कसकर फिट होगा।

और जाहिर है, प्राचीन समय में, उनके पास इनमें से प्रत्येक डिब्बे के लिए इनमें से एक टोपी होती थी। यीशु के समय में दफ़नाने की रीति-रिवाजों का एक दिलचस्प पहलू यह था कि वे सड़ चुके शवों की हड्डियाँ ले लेते थे, और विशेष रूप से यदि परिवार को किसी अन्य मृत व्यक्ति के लिए जगह की आवश्यकता होती थी, तो वे हड्डियाँ लेते थे और कंकाल के जोड़ों को अलग कर देते थे और सब कुछ और उन्हें एक अस्थि-कलश या हड्डी के बक्से में रख दें। यह अपने ऊपर लिखे शिलालेख के कारण प्रसिद्ध है।

आप देख सकते हैं कि इसे सभी रोसेट्स और सभी हेरिंगबोन पैटर्न और उस पर मौजूद हर चीज़ से कितना सजाया गया है। यह काफी अच्छे से किया गया है। और यहाँ इसके अंत में एक बहुत ही सुंदर शिलालेख है।

शिलालेख में वास्तव में लिखा है कि यह कैफा के पुत्र जोसेफ बार कैफा का है। तो, यह सवाल है कि क्या यह वास्तविक हड्डी का बक्सा है जिसमें महायाजक के अवशेष दफनाए गए थे। यह काफी फैंसी है।

यहाँ एक अधिक सामान्य चित्र है। आप लगभग एक दशक पहले समाचार देख रहे होंगे जब इनमें से एक और अस्थि-पंजर की विवादास्पद खोज हुई थी जिसके बारे में तर्क दिया गया था कि यह यीशु के भाई का अस्थि-पंजर है। संभवतः आपको अस्थि-कलशों में उतनी दिलचस्पी नहीं है, लेकिन हममें से जो जॉन के सुसमाचार के अकादमिक अध्ययन में शामिल हैं, उनके लिए यह काफी दिलचस्प बात है।

यदि आप BAR, बाइबिल पुरातत्व समीक्षा साइट पर गूगल करते हैं, तो आप इसके बारे में बहुत सारी जानकारी पा सकते हैं। इसलिए, जब हम उस तरीके की ओर मुड़ते हैं जिसमें जॉन की सुसमाचार में यीशु की कहानी बताई गई है, तो मुझे लगता है कि जिस तरह से यीशु को कुछ हद तक निष्क्रिय बताया गया है और जिस तरह से यीशु को वास्तव में वर्णित किया गया है, उसके बीच हमें एक दिलचस्प तरह का विरोधाभास मिलता है। सक्रिय रहना। एक ओर, यीशु स्वयं को गिरफ्तार करने, मुकदमा चलाने, क्रूस पर चढ़ाने और दफनाने की अनुमति देता है।

हम जानते हैं कि हम कह सकते हैं कि वह ऐसा होने देता है क्योंकि वह कहता है कि वह पिता की आज्ञाकारिता में स्वतंत्र रूप से अपना जीवन दे रहा है। तो, कथा में उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जिसे बाकी सभी लोग इधर-उधर धकेल रहे हैं। तो, एक अर्थ में, वह एक ऐसा व्यक्ति प्रतीत होता है जो कुछ हद तक शक्तिहीन है, कोई ऐसा व्यक्ति जो वास्तव में होने वाली किसी भी चीज़ को प्रभावित करने में असमर्थ है।

तो, वह एक निष्क्रिय व्यक्ति है। दूसरी ओर, जब आप कथा पढ़ना जारी रखते हैं और इसके अन्य पहलुओं पर ध्यान देते हैं, तो यीशु को हर चीज़ के बारे में पता चलता है जो चल रहा है। अध्याय 18, पद 4. इसलिए, वह पतरस से अपनी तलवार ऊपर उठाने के लिए कहता है क्योंकि वह जानता है कि क्या होने वाला है और उसका मानना है कि ऐसा होना आवश्यक है।

यीशु पिता की आज्ञा मान रहा है। यीशु का मानना है कि इसी तरह परमेश्वर की योजना पूरी होगी। इसलिए, वह इसे सक्रिय रूप से अपना रहा है और सक्रिय रूप से इसमें भाग ले रहा है।

यीशु अपने आरोप लगाने वालों को जवाब देते हैं, उनसे बात करते हैं, और अनिवार्य रूप से उन्हें इस समय की व्यावहारिकता के अलावा और अधिक ऊंची चीजों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करते हैं। यीशु अपनी मृत्यु की स्थिति में अपनी माँ की देखभाल करने की पहल भी करता है। उसकी देखभाल की जाएगी।

इसलिए, मुझे लगता है कि विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार में, उस मामले के लिए सभी सुसमाचारों में, हम यीशु को एक निष्क्रिय, असहाय, कमजोर व्यक्ति के रूप में नहीं देखना चाहते हैं जिसे बड़े अधिकारियों द्वारा बस इधर-उधर धकेला जा रहा है और उस पर दया करें किसी कमजोर व्यक्ति के रूप में। जहाँ तक परमेश्वर के पुत्र के बारे में बाइबिल की शिक्षा को समझने की बात है तो यह बिल्कुल भी काम नहीं आएगा। परमेश्वर का पुत्र हमारे लिए स्वेच्छा से इन सभी कष्टों को उठा रहा है और वह पिता की महिमा करने और अपने लोगों के प्रति अपने प्रेम के कारण पिता की इच्छा को स्वीकार करता है।

यहाँ जॉन 18 और 19 में इस बारे में भी बहुत सारी जानकारी है कि कैसे यीशु का जुनून परमेश्वर के वचन की पूर्ति है। हमारा समय यहां क्षणभंगुर है। हमने अध्याय 18 और 19 के बारे में काफी बात की है, इसलिए हम इन मामलों में गहराई से जाने की योजना नहीं बनाते हैं क्योंकि हमने पहले ही संक्षेप में उनका उल्लेख किया है क्योंकि हमने कथा प्रवाह किया है।

तो, यीशु ने स्वयं अपने जुनून के बारे में बात की है और उनके स्वयं के शब्द पूरे हो गए हैं। जॉन के कथावाचक, प्रिय शिष्य, जब वह कहानी सुनाते हैं, तो यह स्पष्ट करते हैं कि हम कुछ स्थानों पर देखते हैं कि पुराने नियम के विभिन्न पाठ किस तरह से पूरे हो रहे हैं, जिस तरह से यीशु को गिरफ्तार किया गया है और सूली पर चढ़ाया गया है। जैसे ही हम कथा में कुछ प्रमुख धार्मिक बिंदुओं के बारे में सोचते हैं, यह मुद्दा सामने आता है कि क्या यीशु राजा हैं।

अध्याय 18, श्लोक 6, और वहाँ से होकर कई अन्य स्थान, उसका राजत्व। यह सब पिलातुस के शीर्षक में समाप्त होता है, मेरा मानना है कि उन्हें प्राचीन काल में पिलातुस का तख्ती, पिलातुस का चिन्ह कहा जाता था जो क्रॉस पर या क्रॉस के पास कहीं रखा जाता है। यह उन धार्मिक नेताओं के लिए काफी अपमानजनक बात है जो कहते हैं, यहूदियों का राजा मत लिखो, यह लिखो कि उन्होंने कहा कि मैं यहूदियों का राजा हूँ।

वे यह नहीं चाहेंगे कि यह बात कायम रहे कि यीशु किसी भी मायने में यहूदियों का राजा था। हालाँकि, पिलातुस ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह इसे वैसे ही छोड़ देगा जैसे कि यह किसी अन्य कारण से है, न कि केवल जिस तरह से उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उसके साथ छेड़छाड़ की है। लेकिन यहां स्पष्ट रूप से एक बहुत गहरी, गहरी विडंबना है कि पिलातुस जिसे यहूदियों का राजा लिखता है, वह केवल यहूदियों से चिपकाने के लिए और उन्हें यह दिखाने के लिए कि रोमन यहूदी राजाओं के साथ यही करते हैं, वह वास्तव में यहूदियों का राजा है।

इस मामले में, यहूदियों से भी अधिक का राजा, उस दुनिया का राजा जिसे उसने बनाया और उसमें प्रवेश किया। तो, क्रूस पर इस शीर्षक में और जॉन के सुसमाचार में पहले एक राजा के रूप में यीशु के विषय को उठाते हुए काफी गहन सबक पर विचार किया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि पतरस, जो यीशु के अनुसार, तीन बार उसका इन्कार करेगा और जो वास्तव में ऐसा करता है, और यहूदा जो यीशु को धोखा देता है, के बीच संबंध पर विचार करना भी कुछ हद तक शिक्षाप्रद और गहरा है।

एक बात जो हम यहूदा से निश्चित रूप से सीखते हैं वह यह है कि जो लोग अक्सर अनुग्रह के साधनों के बहुत करीब होते हैं, जरूरी नहीं कि वे अनुग्रह के अंत से प्रभावित हों। यह एक बहुत ही भयावह विचार है जब आप इस तथ्य पर विचार करते हैं कि यहूदा यीशु के साथ घूमता था। वह अपने मंत्रालय के पूरे समय उनके साथ थे।

उसने अपने द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा और फिर भी किसी तरह उसका हृदय इससे गहराई से नहीं बदला। इसके विपरीत, यहूदा किसी भी कारण से यीशु से इतना मोहभंग हो गया कि उसने उसे सत्ताधारी अधिकारियों को धोखा दे दिया क्योंकि कहीं न कहीं उसने फैसला किया था कि यीशु वास्तव में वह व्यक्ति नहीं था जिसे वह ढूंढ रहा था। शायद यहूदा का मोहभंग हो गया था क्योंकि उसे एहसास हुआ कि यीशु वह व्यक्ति नहीं था जो खुद को दुनिया के सामने दिखाने जा रहा था।

शायद जॉन, शाब्दिक रूप से परिष्कृत तरीके से बोलने के अपने सूक्ष्म तरीके से, शायद वह प्रश्न है जो अन्य जूडस ने जॉन अध्याय 16 में पूछा था, आप खुद को दुनिया के सामने क्यों नहीं दिखाने जा रहे हैं? शायद यहूदा विश्वासघाती यहूदा के मन में जो कुछ था उसे आवाज़ दे रहा है। विश्वासघाती यहूदा को एहसास हुआ कि यीशु उस तरह का मसीहा नहीं होगा जैसा वह चाहता था, उस तरह का मसीहा नहीं होगा जो रोमनों को उखाड़ फेंकेगा और डेविड साम्राज्य की महिमा को इज़राइल में वापस लाएगा। शायद इसीलिए यहूदा ने वह किया जो उसने किया।

उसने उस प्रकार के मसीहा की तलाश नहीं की जो यीशु निकला। शायद तब यहूदा के पास वही विश्वदृष्टिकोण था जो जॉन अध्याय 6 में उन लोगों के पास था जब उन्होंने रोटी खाई थी और तृप्त थे और वे यीशु को लेना चाहते थे और उसे राजा बनाना चाहते थे। बेशक, यह वहां स्पष्ट हो गया और जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ी यह और भी स्पष्ट हो गया कि यीशु उस तरह का मसीहा नहीं बनने वाला था।

फिर हमारे पास पतरस की कहानी है जिसने तीन बार प्रभु का इन्कार किया। मुझे लगता है कि यहूदा किसी तरह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे शायद जॉन 15 में निष्फल शाखाओं में से एक के रूप में देखा जाना चाहिए। दूसरी ओर पीटर जॉन 15 की उस शाखा की तरह है जिसे माली से, पिता से, किसान से कुछ छँटाई की ज़रूरत है ताकि वह अधिक फल उत्पन्न करे।

तो, पीटर को निश्चित रूप से यहां कुछ काट-छांट मिल रही है। उसने आत्मविश्वास से दावा किया कि वह यीशु का अनुसरण कर सकता है और वह उसके साथ कहीं भी जाएगा और वह मृत्यु तक

उसका अनुसरण करेगा। यीशु ने तुरन्त कहा, मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।

हमने यहां यह कहानी पढ़ी है कि पीटर यह काम कैसे करता है। हम अपने अगले वीडियो में पढ़ने जा रहे हैं और उस अंश का अध्ययन करेंगे जहां पीटर को यीशु के लिए मंत्रालय में बहाल किया गया है, जैसा कि आप कह सकते हैं, इस कहानी में भगवान की कृपा और परिस्थितियों के कारण काट दिया गया था। तो, हम जॉन 18 और 19 पर अपने वीडियो को उस टुकड़े को देखकर समाप्त करते हैं जो रोम में पैलेटिन हिल पर खोजा गया है, जो शायद तीसरी शताब्दी के अंत से पहली शताब्दी के अंत तक का है, मुझे कहना चाहिए कि यह तीसरी शताब्दी की शुरुआत का है।

मुझे लगता है कि हम दूसरी शताब्दी कह सकते हैं और पर्याप्त सुरक्षित हो सकते हैं। इसे एलेक्सामेनोस ग्राफिटम कहा जाता है, जो स्पष्ट रूप से प्रारंभिक चर्च में प्राचीन काल में ईसाई पूजा का एक व्यंग्यात्मक चित्रण है। इससे हमें कुछ अंदाज़ा मिलता है कि रोम के लोग सूली पर चढ़ने को कैसे देखते थे और हमें यह अंदाज़ा मिलता है कि गैर-ईसाई प्राचीन रोम के लोग किसी ऐसे समूह के बारे में क्या सोचते थे जो अपनी धार्मिक विरासत में क्रॉस को प्राथमिकता देगा या महिमा देगा या शामिल करेगा।

इस शिलालेख में, हमारे पास व्यक्तिगत एलेक्सामेनोस का नाम है, और एलेक्सामेनोस को कुछ करते हुए चित्रित किया गया है, अन्यथा, वह भगवान, थियोन की पूजा कर रहा है। इसलिए एलेक्सामेनोस भगवान की पूजा करते हैं। जाहिर तौर पर भित्तिचित्र का यह टुकड़ा, यदि आप चाहें तो एक ग्रेफिटम, किसी ऐसे व्यक्ति का उपहास करने, ताना मारने, मज़ाक उड़ाने के लिए है जो पूजा करेगा, जो सम्मान करेगा, जो क्रूस पर चढ़ाए जाने के शिकार को विस्मय में रखेगा।

और इसे और भी बदतर बनाने के लिए, सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति को गधे के सिर वाले इंसान के रूप में चित्रित किया गया है। मैं गधा कह सकता था, लेकिन मैंने गधा कहा क्योंकि उस समय के ईसाइयों, कई लोगों के बारे में बिल्कुल यही सोचा था कि वे क्रूस पर मरने वाले की पूजा करने के लिए मूर्ख थे। जैसा कि पॉल ने इसे 2 कुरिन्थियों में और 1 कुरिन्थियों में कहा था, मुझे लगता है कि मैं अभी ज्यादातर 1 कुरिन्थियों अध्याय 1 के बारे में सोच रहा हूं, कि क्रूस कई अन्यजातियों के लिए, यूनानियों के लिए एक मूर्खतापूर्ण बात थी, और यह वास्तव में बहुत अच्छी तरह से समझ में नहीं आया।

मैं भगवान को धन्यवाद देता हूं कि इस सब के बावजूद, एक ही प्रकार के कई लोग, शायद भगवान की कृपा से, यहां तक कि वह व्यक्ति जिसने सबसे पहले इस ग्रेफिटम को वहां की दीवार में खरोच दिया था, शायद इस व्यक्ति को भी बाद में क्रॉस के माध्यम से इसका एहसास हुआ, ईश्वर उस संसार को अपना असीम प्रेम दिखा रहा था जो उसके प्रति शत्रुतापूर्ण था। मैं जॉन 18 और 19 को पोंटियस पिलाट पर विचार किए बिना छोड़े बिना नहीं रह सकता। शुरुआती चर्च में अक्सर पोंटियस पिलाट की प्रशंसा की जाती थी क्योंकि चर्च इस गलत निष्कर्ष पर पहुंच गया था कि यह सब यहूदियों पर था कि उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया।

गॉस्पेल में जो कुछ भी घटित हुआ और यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, उसके लिए यहूदी लोगों को दोषी ठहराने का कोई यहूदी-विरोधी तरीका नहीं था। यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनिच्छा के कारण पिलातुस को कुछ हलकों में एक संत के रूप में भी देखा जाता था। निःसंदेह, पीलातुस ने दावा किया, मुझे लगता है, कि उसने सारा दोष यहूदियों पर डाल दिया और वे चाहते थे कि यीशु मर जाए, इसलिए वह उनके साथ चला गया।

लेकिन यह उसका कॉल था। वह वही था जिसके पास प्रांत में मृत्युदंड पर अंतिम अधिकार था, और पीलातुस का नैतिक मार्गदर्शन स्पष्ट रूप से ऐसा था कि भले ही पाठ कहता है कि वह वास्तव में इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा था कि यीशु ने कुछ भी गलत किया था, फिर भी, वह पूरी तरह से होगा यीशु से छुटकारा पाने के लिए तैयार है अगर इससे उसके लक्ष्यों को बढ़ावा मिलता है या किसी तरह से उसके जीवन में मदद मिलती है, उसका जीवन आसान हो जाता है, या उसे अपने वरिष्ठों के साथ परेशानी में पड़ने से रोका जाता है। तो, हम पीलातुस से क्या सीखेंगे? एक बात के लिए, यह स्पष्ट है कि पीलातुस के मन में यहूदी लोगों के प्रति कोई सम्मान नहीं था।

उनकी मांगें मानने का एकमात्र कारण यह था कि वे उसे रोम के मामले में परेशानी में डाल सकते थे। वे कह सकते थे कि उसने एक ऐसे राजा को अस्तित्व में रहने की अनुमति दी जो सीज़र के लिए खतरा होगा। इसलिए पीलातुस ने यहूदियों का तिरस्कार किया।

हम यहूदी लोगों के बारे में क्या सोचते हैं? क्या हम भी उनके बारे में यही दृष्टिकोण रखते हैं कि हम कमतर लोग हैं? क्या हम उनके प्रति पक्षपाती हैं? क्या हम उनकी नाक के आकार या इस तथ्य के बारे में मजाक बनाते हैं कि उन्होंने अमीर बनने के लिए अन्य लोगों से पैसे चुराए? यहूदी लोगों के बारे में हमारे विचार किस प्रकार के हैं? हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ये यीशु के लोग हैं, और यद्यपि सभी मनुष्यों की तरह उनमें भी गलतियाँ हैं, हम इस संबंध में पीलातुस की नकल नहीं करना चाहते हैं। पीलातुस के बारे में एक और बात जो मुझे दिलचस्प लगती है वह यह है कि जब बात उसके लिए काम आती है तो वह यीशु को आज़ाद करने का प्रयास करता है, लेकिन जब राजनीतिक लाभ की बात आती है तो वह उसे सूली पर चढ़ाने में प्रसन्न होता है। इसलिए, मैं जानना चाहूँगा कि पीलातुस की आत्मा कहाँ है।

मैं जानना चाहता हूँ कि वे कौन से प्रमुख मूल्य हैं जिन्होंने उन्हें वे निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया जो उन्होंने लिए। क्या पीलातुस के पास भी कोई आत्मा थी, या उसके सभी मूल मूल्य परक्राम्य थे? क्या पीलातुस के पास किसी प्रकार का कोई केंद्र था? पीलातुस अत्यंत निंदक प्रतीत होता है। पीलातुस कहता है, सत्य क्या है? वह यीशु को इतनी गंभीरता से नहीं लेता कि उससे इस बारे में बहस कर सके कि सत्य क्या है।

वह बस यही कहता है, मूलतः कौन परवाह करता है। सच क्या है? मुझे इसकी चिंता नहीं है कि सत्य क्या है। मुझे अपने घोंसले में पंख लगाने की चिंता है।

मैं सफल होने को लेकर चिंतित हूँ। मुझे इस बात की चिंता है कि मुझे इन दुष्ट यहूदी लोगों से कोई परेशानी न हो जो मेरे गवर्नर के शासन को कठिन बना रहे हैं। इसलिए, चूँकि पीलातुस के पास

कोई केंद्र नहीं है, उसके पास कोई नैतिक दिशा-निर्देश नहीं है, उसके पास कोई आत्मा नहीं है, वह यीशु को सूली पर चढ़ाने में भागीदार है।

यह उसके अधिकार से है कि वह एक निर्दोष व्यक्ति को सूली पर चढ़ा देता है जो दुनिया का उद्धारकर्ता बन जाता है। इसलिए, मैं बस आशा करता हूं कि जैसे ही हम पिलातुस को देखते हैं, हमें एहसास होता है कि हम भी अपनी आत्मा को किसी ऐसी चीज के लिए बेचने का प्रयास कर रहे हैं जो हमें बहुत कम समय के लिए लाभ देगी और हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हमारे पास मूल मूल्य हैं जो समझौता योग्य नहीं हैं। मुझे यकीन नहीं है कि यहां जॉन 18 और 19 में सबसे घृणित व्यक्ति कौन है, लेकिन मेरा दिमाग पीलातुस की ओर दौड़ता है, इज़राइल के धार्मिक नेताओं की ओर नहीं।

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 19 है, यीशु को गिरफ्तार किया गया, मुकदमा चलाया गया, क्रूस पर चढ़ाया गया और दफनाया गया। यूहन्ना 18:1-19:42.